आपात गोली बन सकती है आफत गोली

डॉ. अमोल अन्नदाते

आजकल गर्भ-निरोध की आपात गोली का विज्ञापन टीवी और अन्य माध्यमों में ज़ोर-शोर से किया जा रहा है। जाहिर है, संक्षिप्त विज्ञापन में इसके बारे में विस्तार से जानकारी देना संभव नहीं होता या दी नहीं जाती। इस वजह से इसको लेकर समाज में कई गलतफहमियां फैल रही हैं। इन विज्ञापनों के माध्यम से कई गलत संदेश भी समाज में जा रहे हैं। यह ज़रूरी है कि इन गोलियों के बारे में सही जानकारी उपलब्ध हो।

क्या है आपात गर्भ निरोध?

यदि यौन सम्बंध के समय कंडोम या अन्य कोई साधन असफल हो जाए या महिला के साथ ज़बर्दस्ती की जाए (जैसे बलात्कार) या परिवार नियोजन के साधन इस्तेमाल न करने की भूल हो जाए तो 72 घंटों के भीतर दवा लेकर गर्भ ठहरने से रोका जा सकता है। इसे आपात गर्भ निरोध कहते हैं। अनचाहे गर्भ से बचने के लिए यह एक वरदान है, लेकिन ये दवाएं खतरनाक भी हो सकती हैं।

आपात गर्भ-निरोध के साधन

यह भ्रम फैल रहा है कि विज्ञापन में दिखाई जा रही दवा ही आपात गर्भ निरोध की एकमात्र दवा है। यह सही नहीं है। आपात गर्भ निरोध के तीन अन्य साधन हैं:

1) लिवोनॉरजेस्ट्रॉन की एक गोली। यह दवाई की दुकानों पर उपलब्ध होती है। लिवोनॉरजेस्ट्रॉन की 1.5 मिलीग्राम की गोली यौन सम्बंध के बाद 72 घंटों के भीतर (अच्छा हो कि 12 घंटों के भीतर) ली जाए, तो गर्भ ठहरने से रोका जा सकता है।

2) एस्ट्रोजेन और प्रोजेस्टेरॉन की गोलियां। ये माला-डी के नाम से सरकारी अस्पतालों में मुफ्त में मिलती हैं। बाज़ार में मिलने वाली लिवोनॉरजेस्ट्रॉन की गोली और माला-डी में बहुत अधिक फर्क नहीं है। यौन सम्बंध के बाद 72 घंटों के भीतर माला-डी की दो गोलियां दो बार, 12 घंटों के अंतराल से ली जाती हैं।

3) परिवार नियोजन का कॉपर टी नामक साधन। यह भी सरकारी अस्पतालों में मुफ्त में लगाया जाता है।

कई महिलाएं आर्थिक रूप से इतनी सक्षम नहीं होती कि वे बाज़ार से गोली खरीद सकें। ऐसी महिलाओं के लिए माला-डी और कॉपर-टी सबसे अच्छे विकल्प हैं क्योंकि ये सरकारी अस्पतालों में मुफ्त मिलते हैं।

कॉपर टी का अतिरिक्त फायदा यह होता है कि यौन सम्बंध के पांच दिन बाद तक इसे लगाया जा सकता है। इसके कारण उसी ऋतु चक्र में या उसके बाद भी गर्भ को ठहरने से रोका जा सकता है। यदि किसी महिला के साथ बलात्कार हो और उसे 72 घंटों के बाद पता चले कि गर्भ ठहर गया है तो ऐसे समय गोली काम नहीं आती, लेकिन कॉपर टी लगाना लाभदायक होता है। अगला ऋतु चक्र आने के बाद कॉपर टी को निकाला जा सकता है। यदि कोई ऐसी महिला, जिसे पहले से एक बच्चा है, अस्पताल आकर आपात गर्भ निरोधक की मांग करे तो उसे गोलियों

की बजाय कॉपर टी लगवाने की सलाह दी जानी चाहिए।

क्रियाविधि

अंडाशय में से अंडाणु बाहर आने की प्रक्रिया को ये गोलियां धीमा कर देती हैं या पूरी तरह रोक देती हैं। फिर भी यदि अंडाणु और शुक्राणु का मिलन हो जाए तो इन गोलियों के कारण गर्भाशय की भीतरी दीवार में ऐसे बदलाव हो जाते हैं जिनके कारण गर्भ ठहर नहीं पाता क्योंकि निषेचित भ्रूण गर्भाशय की दीवार से चिपक ही नहीं पाता।

ध्यान में रखने की बात यह है कि गर्भ ठहर जाने के बाद ये गोलियां काम नहीं करतीं। ये गर्भ निरोधक गोलियां हैं, ठहरे हुए गर्भ को समाप्त करने (गर्भपात) की नहीं।

एक अन्य महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि यौन सम्बंध के 12 घंटों के भीतर ये गोलियां ली जाएं तो गर्भ न ठहरने की संभावना 95 प्रतिशत होती है। यदि गोलियां 47 से 61 घंटों के भीतर ली जाएं तो गर्भ न ठहरने की संभावना केवल 47 प्रतिशत रह जाती है।

केवल विज्ञापनों देखकर इन गोलियों का उपयोग करने वाली आज की युवा पीढ़ी को यह जानकारी नहीं होती कि इन गोलियों की शत-प्रतिशत सफलता की गारंटी नहीं होती है। यौन सम्बंध के जितनी देर बाद गोलियां ली जाएं उतनी इनकी सफलता की संभावना कम होती जाती है। यदि अविवाहित युवती इन गोलियों की असफलता का शिकार हो जाए और उसे गर्भ ठहर जाए तो उसे भारी मानसिक सदमा पहुंच सकता है। यदि विवाहित महिला ये गोलियां ले और वे असफल हो जाएं तो उसके बच्चे में कई प्रकार की विकृतियां हो सकती हैंः उसकी योनि (यदि बच्चा मादा है) की पेशियों में कमज़ोरी, शरीर के अन्य अंगों में विकृतियां, कैन्सर या हृदय रोग हो सकता है। कौन-सी मां अपने बच्चे में इस प्रकार की विकृतियां देखना चाहेगी? अतः इन गोलियों के असफल हो जाने पर आम तौर पर मां को डॉक्टरों द्वारा गर्भपात करवाने की सलाह दी जाती है।

अन्य सावधानियां

कई लोगों को पता नहीं होता कि यह गोली केवल एक ही बार गर्भधारण से बचाव कर सकती है। यदि दोबारा असुरक्षित यौन सम्बंध हो जाए तो फिर से गोली लेना ज़रूरी होता है। एक अन्य खतरा यह होता है कि यदि गोली असफल हो जाए तो ठहरने वाला गर्भ मां के पेट में, गर्भाशय के बाहर कहीं भी ठहर सकता है। इससे उस महिला की जान को गंभीर खतरा हो सकता है। अतः अगर गोली लेने के बाद दो सप्ताह के भीतर पेट में तेज़ दर्द उठे तो बिना देर किए डॉक्टर के पास जाना चाहिए।

आम तौर पर महिलाओं के लगभग 30 दिन के ऋतु चक्र में कभी भी यौन सम्बंध होने पर गर्भ ठहरने की संभावना 8 प्रतिशत होती है। लेकिन 12वें से 18वें दिन के बीच में अंडाणु अंडाशय से बाहर आता है। अतः इन दिनों में गर्भ ठहरने की संभावना अधिक होती है, इसलिए इन दिनों में गोली लेना ज़रूरी होता है।

परेशानियां

- जी मिचलाना - 20 प्रतिशत महिलाओं को पहले 24 घंटों में यह परेशानी होने लगती है। यदि गोली को दूध या भोजन के साथ लिया जाए और उल्टी न होने की दवा ली जाए तो यह परेशानी काफी कम की जा सकती है।
- उल्टियां - पांच प्रतिशत महिलाओं को यह परेशानी हो सकती है। यदि गोली लेने के दो घंटों के भीतर उल्टी हो जाए तो गोली फिर से लेना ज़रूरी होता है।
- अनियमित मासिक धर्म - ये गोलियां लेने के बाद कुछ माह तक मासिक धर्म अनियमित हो सकता है या मासिक धर्म में अधिक रक्तस्राव की शिकायत हो सकती है।
- इनके अलावा, सिरदर्द, चक्कर आना, थकान और स्तनों में दर्द की भी समस्या आ सकती है।

कौन न ले?

- जिन्हें हृदय की बीमारी है।
- जिन्हें मस्तिष्क या शरीर के अन्य किसी भाग में रक्त का थक्का जमने की बीमारी है।
- माइग्रेन के मरीज़
- जिन्हें एन्जाइना की शिकायत है

■ जिन्हें लीवर की कोई बीमारी है

बार-बार लेने पर

यह मुद्दा सबसे महत्वपूर्ण है कि आपात गर्भ निरोधक का इस्तेमाल आपात स्थिति में ही किया जाना चाहिए। कई दम्पति यह सोचते हैं कि कंडोम से यौन सम्बंध का पूरा आनंद नहीं मिलता, अतः असुरक्षित यौन सम्बंध बनाकर आपात गर्भ निरोधक लेने में कोई हर्ज़ नहीं है। लेकिन ऐसा करना आग से खेलने के समान है। इन दवाओं को बार-बार लेने के घातक परिणाम हो सकते हैं। स्त्रियों के प्रजनन अंगों पर इनका विपरीत प्रभाव पड़ता है। सबसे सुरक्षित उपाय यही है कि यौन सम्बंधों के समय गर्भ निरोधक साधनों का उपयोग ज़रूर किया जाए। यदि ऐसा नहीं किया गया और आपात गर्भ निरोधक भी असफल हो गया तो फिर गर्भ ठहरने पर गर्भपात ही एकमात्र उपाय रह जाता है। लेकिन गर्भपात करवाने के बाद दस प्रतिशत महिलाएं वंध्या हो जाती हैं यानी वे फिर कभी गर्भ धारण नहीं कर पातीं।

डॉक्टर की ज़िम्मेदारी

ऐसे प्रकरणों में डॉक्टर की भी कुछ ज़िम्मेदारी है।

■ सबसे पहले तो डॉक्टर को यह पता करना चाहिए कि गर्भ धारण, गर्भ निरोधक साधन के असफल हो जाने के कारण हुआ है या इन साधनों का उपयोग ही नहीं किया गया था। यदि इन साधनों का इस्तेमाल ही नहीं किया गया था तो डॉक्टर को चाहिए कि भविष्य में सावधानी रखने की सलाह दें।

■ इन दवाओं का उपयोग करने के इच्छुक व्यक्तियों को चाहिए कि वे डॉक्टर से इन दवाओं के खराब असर, इनके असफल होने की संभावना, और गर्भाशय से बाहर गर्भ धारण की संभावना के बारे में जानकारी प्राप्त कर लें। यदि अगला मासिक धर्म न आए या मासिक धर्म के समय बहुत अधिक खून बहने लगे तो दोबारा डॉक्टर से जांच करवाना चाहिए।

■ डॉक्टर से जांच करवा कर यह सुनिश्चित कर लें कि विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार महिला इस दवा को लेने के लिए सक्षम है या नहीं।

■ यदि स्त्री और पुरुष दोनों ने ही गर्भ निरोधक साधनों का इस्तेमाल नहीं किया है तो ऐसे समय एड्स होने की संभावना बढ़ जाती है। अतः एच.आई.वी. के लिए जांच करवा लेना चाहिए।

■ अविवाहित महिलाएं और कम आयु की युवतियों में ऐसे यौन सम्बंधों के कारण अपराधबोध विकसित हो सकता है। कभी-कभी ऐसी महिलाएं नशीले पदार्थों का सेवन करने लगती हैं। अतः डॉक्टरों को चाहिए कि वे ऐसी महिलाओं को ऐसे सम्बंधों से बचने की सलाह दें।

■ यदि कोई महिला अकेली डॉक्टर के पास आए तो डॉक्टर को उससे यह पूछना चाहिए कि कहीं उसके साथ बलात्कार तो नहीं हुआ है। यदि ऐसा हो तो उसकी जांच करके यह देखना चाहिए कि उसके शरीर पर चोट के निशान तो नहीं हैं। इसके बाद उसकी अनुमति से पुलिस को सूचना देनी चाहिए।

भारत एक आज़ाद देश होने के कारण कौन क्या बेच रहा है और उसके लिए क्या विज्ञापन दे रहा है इस पर कोई पाबंदी नहीं है। किन्तु अपने उत्पाद के कारण और उसके विज्ञापन के कारण समाज में गलत संदेश न जाए यह सुनिश्चित करना हर व्यवसायी का कर्तव्य होता है। आपात गर्भ निरोधक गोलियों का विज्ञापन जिस तरह से किया जा रहा है उससे समाज में और विशेष रूप से युवा वर्ग में यह भ्रांति फैल रही है कि बिना किसी डर के यौन सम्बंध बनाए जाओ। गोली है ना !

एक वाहन पर लिखा था, 'सबसे अच्छा ब्रेक - मन का ब्रेक'। यही बात यौन सम्बंधों पर भी लागू होती है। हमारा समाज विवाह-पूर्व यौन सम्बंधों को गलत मानता आया है और आज भी मानता है। अविवाहित युवाओं को चाहिए कि वे इस लक्ष्मण रेखा को पार न करें। विवाहित जोड़ों को भी परिवार नियोजन के साधनों का विवेक के साथ उपयोग करते हुए इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि आपात गोली की ज़रूरत न पड़े। ऐसा न हो कि आपात गोली आफत की गोली बन जाए। ***(स्रोत फीचर्स)***